Vol 6 Issue 8 September 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor :4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 8 | September - 2016

Indian Streams Research Journal

''अज्ञेय' की कहानियों मे व्याप्त यथार्थवाद का अनुशीलन''

Dr. Satyendra Prakash

हिन्दी विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय टीकमगढ़ (म. प्र.)

Abstract

'अज्ञेय' उन भारतीय रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंनें बीसवीं शताब्दी में भारतीय संस्कृति, भारतीय परंपरा, भारतीय आधुनिकता के साथ साहित्य कला संस्कृति, भाषा की बुनियादी समस्याओं, चिंताओं, प्रश्नाकुलताओं से प्रबुद्ध पाठकों का साक्षात्कार कराया है। व्यक्तित्व की खोज, अस्मिता की तलाश, प्रयोगप्रगति, परंपरा आधुनिकता, बौद्धिकता, आत्मसजगता, कवि कर्म में जटिल संवेदना की चुनौती, रागात्मक संबंधों में बदलाव की चेतना, रूढ़ि और मौलिकता, आधुनिक संवेदन और संप्रेषण की समस्या, रचनाकार का दायित्व, नयी राहों की खोज, पश्चिम से खुला संवाद, औपनिवेशिक आधुनिकता के स्थान पर देशी आधुनिकता का आग्रह, नवीन कथ्य और भाषाशिल्प की गहन चेतना, संस्कृति और सर्जनात्मकता आदि तमाम सरोकारों को 'अज्ञेय' किसी न किसी स्तर पर रचनाकर्म के केन्द्र में लाते रहे हैं। उन्होंने नयी रचना स्थिति की चुनौतियों पर अनेक कोणों से विचार किया है। जब काल ही यथार्थ नहीं रहता, तब उस काल में होने वाले व्यापार कैसे यथार्थ हो सकते हैं। हमारे यथार्थ दुख क्लेश, हमारी यथार्थ आशा आकांक्षा मानव के उद्योग परिश्रम व्यापार मात्रा अयथार्थ हो जाते हैं प्रेमचंद के पश्चात् 'अज्ञेय' ही वह कहानीकार है जिनकी कहानियों मे यथार्थवाद पूर्ण रूप से मुखरित हुआ है। चाहे गैग्रीन की मालती हो या वे दूसरे की सुधा,कोठरी की बात का सुशील हो या मेजर चौधरी की वापसी के मेजर साहब,अमरवल्लरी में पेड़ के पास परित्यक्ता गर्भवती के मृत मिलनें के कारण वृक्ष के प्रति ग्रामीणों के स्वभाव में परिवर्तन आना, शरणदाता में रफीकुद्दीन अपने ही शरणार्थी देविंदर दयाल को जब खानें मे जहर देकर मारनें का प्रयास करता है तो रफीकुद्दीन की पुत्री द्वारा देविंदर दयाल को सचेत किया जाना परन्तु अनुकूल परिस्थितियां आनें पर देविंदर दयाल के स्वभाव में बदलाव आना, रमंते तत्र देवता में सिख बिशनसिंह द्वारा बंगाली औरत को आसरा प्रदान करना परन्तु रात्रि बाहर रहनें के कारण पति द्वारा पत्नी को पहले स्वीकार न करता तथा बाद में दबाव के कारण घर में रखना, तो वहीं बदला में सरदार जी द्वारा सुरैया, उसके पुत्र तथा उसकी पुत्री की हिन्दुओं से रक्षा करना आदि कहानियों मे 'अज्ञेय' जी ने जीवन के यथार्थ से जन मानस को परिचित कराने का पूर्ण प्रयास किया है। सब अपनें अपनें यथार्थ से परिचित है तथा उस यथार्थ को नकारनें के स्थान पर उसे उसीयथार्थ रूप में स्वीकार करते है।

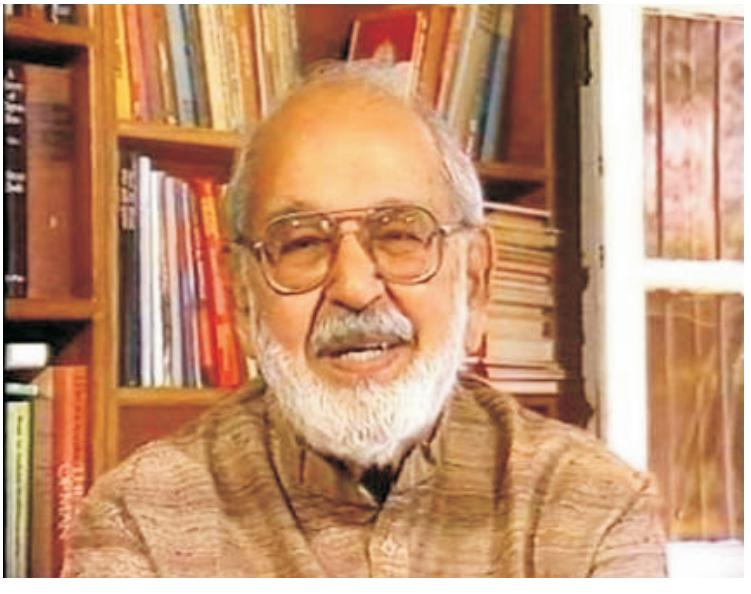

Keywords-यथार्थवाद, कहानियां, 'अज्ञेय', मनोविश्लेष्ण, साहित्य

'अज्ञेय' हिन्दी साहित्य के एक विख्यात तथा विलक्षण साहित्यकार रहे हैं। आपका हिन्दी साहित्य मे विकास एक अविस्मरणीय योगदान रहा है। आपसे हिन्दी साहित्य का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। आपनें हिन्दी साहित्य में तार सप्तक के प्रकाशन से प्रयोगवाद का आविर्भाव किया तो वहीं शेखरः एक जीवनी जैसा कालजयी उपन्यास हिन्दी साहित्य को दिया। 'अज्ञेय' जी की कहानियों ने तो आधुनिक हिन्दी साहित्य में लेखन की परंपरा को ही बदल कर रख दिया, परन्तु हिन्दी साहित्य में पहले ही कहानीकार प्रेमचंद की रचनाओ मे उपस्थित यथार्थवाद से लोग परिचित हो चुके थे अतः प्रेमचंद के परिवर्ती कहानीकारों पर यह आरोप लगता रहा है कि उनकी कहानियां यथार्थ से परे है। हिन्दी लेखन अब केवल कोरी कल्पनाओं तथा संवेदनाओं पर ही रह गया है। इसी तारतम्य में 'अज्ञेय' जी के विरूद्ध भी यथार्थ रहित कहानियों की रचना करने की बात कुछ साहित्यकारों द्वारा की गई थी।यह सही है कि 'अज्ञेय' को एक उपन्यासकार के रूप में अधिक जाना जाता है। पर उनकी कहानियां भी कम लोकप्रिय नहीं हैं। प्रश्न यह है कि क्या साहित्य में केवल यथार्थ पर दृष्टि केंद्रित रखनी चाहिए या कल्पना का प्रयोग करते हुए उसका आदर्शवादी रूप प्रस्तुत किया जाना चाहिए यथार्थवाद का सामान्य अर्थ है- जो वस्तु जैसी है वैसी ही अथवा उसी रूप में प्रस्तुत करना किन्तु कला और साहित्य के क्षेत्र में लोग यथार्थवाद के स्थान पर आदर्शवाद अथवा आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद के पक्षधर रहे हैं। उनके

Volume - 6 | Issue - 8 | September - 2016

पूर्व हिन्दी साहित्य में उपन्यास तथा कहानियां मुख्यतः वर्णनात्मक शैली में लिखे जाते थे। पात्रों के आंतरिक मनोविज्ञान की ओर लेखक का ध्यान उतना नही रहता था। 'अज्ञेय' ने घटनाओं और पात्रों के बाहरी ढ़ांचे की उपेक्षा करके आन्तरिक पक्ष को अधिक उभारा है, पात्रों का यही अंर्तद्वंद्व ही यथार्थ के समीप ले जाता है। कथा-शिल्प की दृष्टि से भी प्रयोग ऐतिहासिक महत्व के हैं। परन्तु मैं कहना चाहता हूँ कि हिन्दी कथा साहित्य को वास्तविक अर्थ में आधुनिक बनानें का श्रेय 'अज्ञेय' को दिया जा सकता है।

गैग्रीन की मालती अपने आपको विवाह के बाद घड़ी के कांटो के साथ चलाना प्रारंभ कर देती है। उसकी बचपन की सारी आदतें ही वैवाहिक जीवन की विभीषिका में कहीं खो सी जाती हैं। उसका चहकना, खेलना-कूदना, उसके पढ़ने-लिखनें की चाह सब खत्म हेा जाती है। ऐसा क्यों होता है क्योंकि यही वैवाहिक जीवन का कटु सत्य है। वैवाहिक जीवन कोई सरस काव्य नहीं बल्कि यथार्थ में तो यह कांटों भरी वह पथरीली राह है जिसमे प्रातःकाल का सूरज भी मनोहारी न होकर तपन प्रदान करनें वाला होता है। विवाह प्रेम का कोई स्वरूप नही है । यह तो केवल एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जो हमें साथ रहनें, एक दूसरे की जिम्मेवारियों को वहन करनें का प्रमाणीकरण प्रदान करती है। जब मालती का रिश्ते का भाई जो कहीं न कहीं एक अनन्य मित्र भी था। मालती के घर पहुचता है तो उक्त वक्तव्य वैवाहिक यथार्थ को प्रदर्शित करने हेतु उचित हैं।

मैंने कुछ खिन्न सा होकर दूसरी ओर देखते हुए कहा- जान पड़ता है!, तुम्हे मेरे आनें से विशेष प्रसन्नता नहीं हुई।

उसनें एकाएक चौंककर कहा- हूं!

= = = =

तभी किसी ने किवाड़ खटखटाए। मैनें मालती की ओर देखा पर वह हिली नहीं। जब किवाड़ दूसरी बार खटखटाये गए, तब वह शिशु को अलग करके उठी और किवाड़ खोलनें लगी।

= = = =

वह बोली- खालूंगी! मेरे खाने की कौन बात है ।

= = = =

मालती की जीवन के प्रति यह नीरसता, वास्तविकता में तो यही वैवाहिक जीवन का यथार्थ है। यहां वैवाहिक संबंध इतनें उलझे हुए होते है कि औरत को एक भोग्या समझा जाता है। औरत केवल पुरूष के सुखों का ख्याल रखनें हेतु है। औरत का स्वयं का कोई अस्तित्व ही नहीं समझा गया। यह भारतीय समाज की एक ऐसी स्थिति है जिस पर बात तो सब करना चाहते है परन्तु सुधार कोई नहीं चाहता। अज्ञेय जी नें औरत के जीवन के इस यथार्थ को बड़ी ही सुन्दरता से उभारनें का प्रयत्न किया है।

वे दूसरे कहानी में हेमन्त तथा सुधा आपस में विवाह करते है, परन्तु दोनो अपने अतीत के उस दूसरे को भी भूल नहीं पाते। दोंनों को विवाह के समय एक दूसरे के पुराने संबंधों के बारे में सब कुछ ज्ञात था फिर भी दोनों आपस में विवाह करते हैं और बाद में आपस में सामंजस्य नहीं रख पाते तथा दोनो अनुभव करते हैं कि उनका अकेलापन अद्वैत में घुल नहीं पा रहा। एक दूसरे की आंखों का सामना नहीं कर पाते क्योंकि उनकी आंखों में हेमन्त या सुधा नहीं बल्कि वे दूसरे है। सुधा द्वारा शराब की मांग किया जाना तथा शराब पीकर अपने अंर्तमन मे चल रहे अंर्तद्वन्द्व को झुठलानें के लिए शराब पीना ही यथार्थ को व्यक्त करता है कि चाहे कुछ भी हो जाए व्यक्ति अपने सत्य को झुठला नहीं सकता। उस सत्य से बचनें के लिए वह तमाम प्रकार के उपाय करता है। और फिर अंत में सुधा का उसी दूसरे के साथ चला जाना भी मानव मन के स्वभाव को प्रदर्शित करता है। 'अज्ञेय' ने अतीत स्मरण के इस प्रसंग में इस बात पर बल दिया है कि रागात्मकता के बिना सामाजिक यथार्थ सत्य रूप नहीं ले सकता। विवाह के बाद लोग पति-पत्नी तो बन जाते हैं परन्तु प्रेम के आभाव में पूरी इकाई नहीं बन पाते। अंततोगत्वा दोनो आपस में अलग होनें का निर्णय लेते हैं।

वह जान सका कि आंखे खुलने के साथ-साथ सुधा का शरीर सहसा कठोर पड़ गया है, और वह जान सका कि पहचान उन आंखों में नहीं थी, उन आंखों में था- वह दूसरा, और इसीलिए आंखें बंद थी।

= = = =

और सुधा ने कहा था, हेमन्त, तुम मेरी एक इच्छा पूरी करोगे?
क्या?
मै मेरे लिए शराब ला सकोगे ? मैं शराब पीना चाहती हूँ।

= = = =

फिर जैसे सहसा याद करके देखा, सुधा कुछ दूर पर चली जा रही थी। और अभी तक वह अकेली थी, अब दूर के एक झाउ के पीछे से एक और व्यक्ति उसके साथ हो लिया और क्षण भर बाद कदम-से-कदम मिलाकर चलनें लगा। हेमन्त नें पहचाना- वही दूसरा

= = = =

Volume - 6 | Issue - 8 | September - 2016

कोठरी की बातमें फिर एक क्षण जब वह और उसकी बहिन पास-पास लेटे हुए किसी विचार में निमग्न है शायद अपनें उस समीपत्व के पवित्र रहस्यमय सुख में और जब उसके पिता एकाएक आकर उसे उठा देते हैं फटकारते हैं कि वह अपनी बहिन के साथ क्यों लेटा है और ऐयी क्रुद्ध-संदेहपूर्ण जुगुप्सा मिश्रित ईर्ष्यावाली और इतनी विषाक्त दृष्टि से उनकी ओर देखते हैं।

इस प्रकार सुशील के अपनी बहिन के साथ लेटे होनें के साथ पिता द्वारा डांटे जाने के कारण उसे स्त्री पुरूष संबंधों के एक नये यथार्थ स्वरूप की अनुभूति होती है जबकि वह अपनी वयःसंधि की प्रकृति के अनुरूप ही व्यवहार कर रहा था। सुशील के लिए वह सिर्फ अपनी बहिन के साथ उस अनजानें समीप्यसुख के कारण ही लेटा था परन्तु पिता के डांटनें के बाद उसके द्वारा बचपन मेंदेखे गए उसकें माता-पिता के संभोगरत दृश्यों का नया ही रूप दृष्टिगत होता है।

लेटरबाक्सदेश विभाजन के समय की कहानी का चित्रण किया गया हैजिसमें रोशन नाम के लड़के के माता, पिता एवं चाचा आदि परिवारजन संभवतः मारे जाते है परन्तु बाल सुलभ मन को कहां इन सब का पता रहता है वह लेटरबाक्स के समीप खड़ा रहता है और अपने पिता से बात करनें हेतु चिट्ठी लिखना चाहता है। इस घटना का वर्णन है।

कहानी में अत्यंत मार्मिक ढ़ंग से एक बालक की मनोदशा से उत्पन्न क्रियाकलापों के यथार्थ को निरूपित किया गया है। कैसे एक बालक अपने पिता के सानिध्य के आभाव में उसे पत्र लिखना चाहता है लेखक द्वारा समझानें पर भी वह पत्र के इंतजार में खड़ा रहता है तथा विभाजन से उत्पन्न इस यथार्थ विभीषिका का लेखक के पास कोई उत्तर नहीं होता कि कैसे वह उस बालक को सच्चाई से अवगत कराये।

लड़के ने जैसे साहस बटोरकर पूंछा- जी! इसमें कहां की चिट्ठी जाती है!
मैनें कहा-सब जगह की। तुझे कहां भेजनी है, चिट्ठी!
बाबूजी को!
= = = =
और मेरी चिट्ठी, मै भी तो उन्हें लिखना चाहता हूँ!
मै ठिठक गया।
= = = =

अलिखित कहानीमें दो समान रूप से पोषित बालकों की दशाओं का वर्णन है, जिसमें दोनों बालकों की शिक्षा, विवाह आदि समान परिस्थितियों में होते हैं। दोनों अपनी पत्नियों को उनके मायके से लानें हेतु जाते हैं और दोनों पत्नियों द्वारा लज्जित करके भगा दिये जाते हैं। दोनों ही स्त्रियों से विमुख हो जाते है। एक सब छोड़कर चला जाता है और बाद में तुलसीदास जैसा ख्यात विद्वान बनता है और जो दूसरा व्यक्ति था, वह पारिवारिक झंझावतों में पड़कर पुनः अपनी पत्नी को लेनें जाता है बाद में पत्नी द्वारा बार-बार लज्जित होता रहता है। कहानी में दोनों पात्रों में पर्याप्त समानताएं हैं फिर भी दोनों में सबसे बड़ी असमानता है आर्थिक असमानता। तुलसू अत्यंत ही विपन्न लेखक है जो बड़ी मुश्किल से अपने परिवार का लालन-पालन कर पाता है। तुलसू यथार्थ में अपनी सामान्य मूलभूत आवश्यकताओं के लिए जूझता रहता है। वहीं तुलसीदास संपन्न होने के कारण एक बड़ा लेखक बन जाता है। तुलसू की पत्नी उसके लेखन की तुलना अपनी चाकू से करती है क्योंकि चाकू कुछ काम तो आती है। इस प्रकार अलिखित कहानी में 'अज्ञेय' धन संबंधी आवश्यकताओं के यथार्थ से भली-भांति परिचित कराते हैं।

उसे संबोधन करके वे वाक्य दोहराने लगा, उसने विस्मय से मेरी ओर देखा फिर झुंझलाकर बोली- यह सब काम करना पड़ता, तो पता लगता

यदि मै इतने से घबरा जाता तो क्या खाक प्रेमिक होता ? मैं और भी कहनें लगा,

उसे गुस्सा आ गया बोली- तुम्हें शर्म भी नही आती। मैं काम करती मरी जाती हूँ, घर में एक पैसा नहीं है और तुम बहके चले जा रहे हो जैसे मै कोई थियेटर की
= = = =

पति के घर आकर उसनें तुलसू के कहा तुम्हारे यहां जोरू के गुलाम बनकर बैठ रहनें की कोई जरूरत नहीं है। जाओ कुछ कमाकर लाओ ताकि पेट भर खाना तो मिले।
= = = =

यह भोड़ी छुरी अच्छी है साग पात तो काट लेती है कुछ काम तो आती है। कुछ काम तो आती है।
= = = =

मेजर चौधरी की वापसी में 'अज्ञेय' जी पुरूष जीवन के यथार्थ से परिचय कराते हैं कि पुरूष चाहे किसी भी स्थिति में रहे वह अपनें अहं पर चोट बर्दाश्त नहीं कर सकता। आदमी हमेशा विजय चाहता है और यदि वह विजय स्त्री अथवा काम भोग से जुड़ी हो तो फिर तो बात कई गुना बढ़ जाती है। सामान्य तौर पर सैनिक जब सीमा पर थे, तब स्त्री संसर्ग से दूर रहनें के लिए विवश थे परन्तु जब वे स्त्री सामीप्य में आते है तो काम-भोग में लग जाते हैं जब मेजर चौधरी एक सैनिक को ऐसी परिस्थिति में एक स्त्री के साथ पकड़ लेते हैं तो-

वह बोला - यह मेरी है,

मैनें कहा- बको मत और उस औरत से कहा कि, वह चली जाए, पर वह ठिठकी रही,

मैनें उससे पूछा- जाती क्यों नही,

तब वह कुछ सहमी सी बोली- मेरे रूपये ले दो।

Volume - 6 | Issue - 8 | September - 2016

= = = =
बोला- सर गलती मैने की है, लेकिन मै अपने साथियों के बराबर होना चाहता हूं।
= = = =
सच बताउ सर मुझे औरत चाहिए
मैने कहा- यहा कहा है औरत ?
तो बोला- सर मै,ढूंढ़ लूंगा आप कहीं गांव वांव के पास उतार दीजिए।

यहां 'अज्ञेय' आदमी की काम वासना से जुड़े हुए कड़वे यथार्थ को बताते हुए कहते हैं कि सैनिक काम की अतृप्ति के कारण अंदर ही अंदर पीड़ित होता रहता है और उसकी यह पीड़ा तब महिमान्वित हो उठती है, जबकि इस पीड़ा में अपनी असमर्थता के कारण पत्नी की संभावित अतृप्त की पीड़ा भी आ मिलती है इसलिए वह अधिकाधिक स्त्रियों से कामभोग करना चाहता था। । साथ ही वह अन्य सैनिकों से कुछ समय बाद यहां आया था और अन्य साथी उसका मजाक न उड़ायें और वह अपनें अन्य साथियों से कहीं भी गिनती में कम न रहे। अतः वह कामतृप्ति हेतु कुछ भी करनें के लिए तैयार रहता है।

कड़ियां में गांव के संपन्न किसान द्वारा मात्र घर के छप्पर हेतु घास काटे जानें पर एक परिवार की बूढ़ी सास तथा बहु को पीटना तथा पुनः उसकी झोपड़ी का टप्पर तोड़ देना आदि अमीर तथा गरीब के मध्य की खाई के बारे में बताता है, कि किस प्रकार अमीर सदा से ही गरीबों को दमन तथा प्रताड़ित करते आये हैं। अमीरों के लिए कोई भी कार्य गलत नहीं होता, कोई सजा नहीं होती, सारी नियम कायदे केवल गरीबों के लिए ही होते हैं।

हजामत का साबुनमें बच्चे के खो जानें पर लाला अपनें नौकर को पीटता है और नौकर कहता है कि वह बच्चे को घर छोड़कर आया था। परन्तु लाला कुछ भी मानने को तैयार नहीं था, वह तो नौकर को पीटे जा रहा था। और नौकर गलती न होनें के बावजूद लगातार पिट रहा था। नौकर ने किसी भी प्रकार का प्रतिरोध नहीं किया, क्योंकि वह गरीब है और हो सकता है कि प्रतिकार करनें के बाद लाला उसे नौकरी से निकाल दे। इस स्थिति में लेखक के बार-बार कहने के बाद भी नौकर प्रतिरोध नही करता।

अबे हीरू तू एक थप्पड़ तो मार दे लाला के बच्चे को चाहे धीरे से ही चाहे असफल
= = = =

इन कहानियों के अलावा अमरवल्लरी में पेड़ के पास परित्यक्ता गर्भवती के मृत मिलनें के कारण ग्रामीणों के स्वभाव में परिवर्तन आना, शरणदाता में रफीकुद्दीन अपने ही शरणार्थी देविंदर दयाल को जब खानें मे जहर देकर मारनें का प्रयास करता है तो उसकी पुत्री द्वारा उसे सचेत किया जाना परन्तु अनुकूल परिस्थितियां आनें पर देविंदर दयाल के स्वभाव में बदलाव आना, रमंते तत्र देवता में सिख बिशन सिंह द्वारा बंगाली औरत को आसरा प्रदान करना परन्तु रात्रि बाहर रहनें के कारण पत्नी को पहले स्वीकार न करता तथा बाद में दबाव के कारण घर में रखना, बदला में सरदार जी द्वारा सुरैया, उसके पुत्र तथा उसकी पुत्री की रक्षा करना आदि कहानियों मे 'अज्ञेय' जी ने जीवन के यथार्थ से जन मानस को परिचित कराने का पूर्ण प्रयास किया है।यथार्थ में जब आदमी का घर जब जलता है तब उसे दुःख होता है क्योंकि आग की तपन को आदमी अनुभव कर सकता है। पर आदमी तो साकार है आत्मा की तरह तो नहीं है? 'अज्ञेय' सिर्फ कहानी नहीं कहते। वह साथ में चोट देते चलते हैं। कहानी के लिए कहानी लिखना शायद वह सीखे ही नहीं। एक बात और मार्के की है कि इनकी कहानियों मे बहिन और भगिनी प्रेम का बार-बार बड़ा विचित्र जिक्र आया करता है। पगोड़ा वृक्ष की सुखदा, अकलंक की क्रिस्टाबेल, कोठरी की बात में का वह हिस्सा जहां वह और उसकी बहिन पास-पास लेटे हुए किसी विचार में निमग्न है- शायद अपनें उस सामीप्य के पवित्र रहस्यमय सुख में।

'अज्ञेय' जी कहते है कि- "मेरे लिए रचना कर्म हमेशा अर्थवत्ता की खोज से जुड़ा रहा है। यथार्थ की खोज, सार्थक-यथार्थ की खोज की अपनी यात्रा में अपने पाठक को साथ ले जाना चाहता हूँ । इस अर्थ में नहीं कि जो पथ मैं पार कर चुका उसे पाठक के साथ दुबारा नापूं इस अर्थ में कि एक मानचित्र के साथ पाठक को वह पूरा परिदृश्य दिखा दूं जिसमें से होती हुई मेरी यात्रा गुजरी। यह शायद मेरी कहानियों को ही नहीं कहानी मात्र को और आज की कहानी संबंधी चर्चा को एक परिप्रेक्ष्य दे सकेगा जो मेरी समझ में सही परिप्रेक्ष्य होगा और जो यथार्थ अर्थ करनें में भी सहायक होगा।"

इन्द्रनाथ मदान के अनुसार-'अज्ञेय' की कहानी में आधुनिकता की चुनौती को वैयक्तिक धरातल पर ही स्वीकारने का प्रयास है। व्यक्ति सत्य के स्तर पर ही जीवन की जटिलता तथा उसके मूल्यों को व्यक्त करने का प्रयत्न है।यह कहना अनुचित होगा कि इनकी कहानी में सामाजिक चेतना तथा यथार्थ का नितांत अभाव है। इसकी बजाय यह कहना अधिक संगत होगा कि इनका कहानीकार जीवन तथा जगत् का चित्रण एवं मूल्यांकन वैयक्तिक संवेदना के धरातल पर करता और सामाजिक मान्यताओं को भी इसी कसौटी पर रखता है।

प्रभाकर माचवे के अनुसार- 'अज्ञेय' तो वह शिल्पी-चित्रकार, कवि-कहानीकार, संपादक-आलोचक, व्याख्याता-राजनैतिक कार्यकर्ता, प्रकृति और जीवन का सप्राण छाया-चित्रकार, ''अज्ञेय'' साहित्येतिहास-समीक्षक भी हैं, और न जानें क्या-क्या हैं। 'अज्ञेय' ही जो ठहरे।

'अज्ञेय' ने मुख्यत व्यक्ति के आत्मसंघर्ष तथा व्यक्ति और परिवेश के संघर्ष का चित्रण किया है। वे व्यक्ति के अपने नैतिक संघर्ष और दायित्व को उसकी मुख्य समस्या मानते हैं। 'अज्ञेय' की साहित्य यात्रा निरंतर उत्कर्ष की ओर जाने वाली गरिमामय यात्रा का इतिहास सामने लाती है। सच बात तो यह है कि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद के भारतीय साहित्य को वे दूर तक प्रेरित एवं प्रभावित करते रहे हैं। वह विद्रोही स्वभाव के रचनाकार हैं और भाषा, साहित्य, संस्कृति के संबंध में पारंपरिक अवधारणाओं का मूर्तिभंजन

Volume - 6 | Issue - 8 | September - 2016

उनकी रचना प्रकृति का अंग है। बहुधा उनका सृजन और चिन्तन रचनाकर्म के श्रेष्ठतम् शिखरों का स्पर्श करता है। 'अज्ञेय' ने नये सृजन और चिन्तन कर्म को आधुनिक हिन्दी साहित्य में पुनःसंभव बनाया। वे साहित्य की सभी विधाओं में लगभग साठ वर्षो तक साहित्य साधना में निरंतर समर्पित रहे। वह हिन्दी भाषियों के साथ अहिन्दी भाषियों के सर्वाधिक प्रिय रचनाकार हैं। आज का प्रबुद्ध पाठक उनके सृजन चिन्तन के प्रति एक विशेष प्रकार के गहरे लगाव का अनुभव करता है।

संदर्भ सूची

१ –'अज्ञेय' की संपूर्ण कहानियां राजपाल प्रकाशन
२ –कहानी की कहानी रामचंद्र एण्ड कंपनी दिल्ली १९६६
३ –हंस अंक मार्च १९३९
४ – रेडियोवार्ता इलाहाबाद १९५९
५ – अधूरे साक्षात्कार अक्षर प्रकाशन दिल्ली १९६६
६ – हिन्दी का गद्य साहित्य विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी १९६८
७ –'अज्ञेय' का रचना संसार सुषमा पुस्तकालय दिल्ली १९६७

Dr. Satyendra Prakash
हिन्दी विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय टीकमगढ़ (म.प्र.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org